विकास अनुरूप गतिविधियाँ
गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी पूर्व शिक्षा का आधार !

रौमिला सोनी*

आज विद्यालयी पूर्व शिक्षा में गुणवत्ता की बहुत आवश्यकता है जो कि एक अच्छे प्री-स्कूल में बच्चों के विकास अनुरूप गतिविधियों के माध्यम से ही दी जा सकती है। किंतु क्या हकीकत में प्री-स्कूल शिक्षा में गुणवत्ता अथवा क्वालिटी दे रहे हैं ? हम सभी के लिए यह समझना बहुत आवश्यक है कि बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं खेल कार्यक्रम वही होते हैं जो 'विकास अनुरूप गतिविधियों' पर आधारित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण प्री-स्कूल कार्यक्रम में खेल पर आधारित क्रियाकलाप, गीत, संगीत तथा बच्चों के विकास के सभी पहलू यानि उनके संर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है और एक संतुलित कार्यक्रम योजना बनायी जाती है। कई सालों से शिक्षकों और अभिभावकों ने यह देखा है कि बच्चे खेल द्वारा बेहतर सीखते हैं। खेल तथा बाल-विकास पर किए गए शोध भी हमें यह बताते हैं कि छोटे बच्चे बड़ों की तुलना में अलग प्रकार से सीखते हैं। हमें स्मरण रहना चाहिए कि छोटे बच्चे कार्य पुस्तिका पर लम्बी अवधि तक टिक कर काम नहीं कर पाते। ये बच्चे प्रत्यक्ष रूप से सामग्री, वस्तुओं के साथ काम करके आनंद का अनुभव करते हुए बेहतर सीख पाते हैं और अपनी समझ बनाते हैं। 'विकासात्मक अनुरूप कार्यक्रम' की पहचान है कि इसके अंतर्गत शिक्षक एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाते हैं तथा विकास अनुरूपी कार्यक्रम में बच्चे निरंतर सीखते हैं। गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में अच्छी व स्वास्थ्य संबंधी आदतों का विकास होता है, साथ ही अन्य बच्चों के साथ मिल-जुलकर खेलना, अपनी वस्तुओं को सँभालकर रखना, निर्णय करना, समस्या सुलझाना, अपनी बात दूसरों को समझाना, आदि एक गुणवत्ता कार्यक्रम का संकेतक है। प्रस्तुत लेख में लेखिका ने विकास अनुरूपी कार्यक्रम की विस्तार से चर्चा की है।

* *सहायक प्रवक्ता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए शोध अध्ययनों के परिणाम बताते हैं कि प्रारंभिक शिक्षा का सफलता का ताला पूर्व विद्यालयी शिक्षा की कुँजी से खुलता है। हालाँकि नर्सरी विद्यालय पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र, प्रारंभिक शिक्षा की सफलता का एकमात्र आधार नहीं हैं परंतु इस वास्तविकता से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि जिन बच्चों ने घर की चौखट लाँघकर पूर्व विद्यालयी केंद्रों में रचनात्मक अनुभव हासिल किए हैं उन्होंने प्रारंभिक विद्यालयों में अपनी क्षमता का बेहतर प्रदर्शन किया है। एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाने की प्रकृति, सीखने के प्रति उत्सुकता का सतत भाव, सक्रियता, विद्यालयी कार्यों में संलग्नता एवं सतत उपस्थिति ये सभी गुण उन बच्चों में पाए गए जो नर्सरी विद्यालयों की रचनात्मक पगडंडियों से चलकर प्रारंभिक विद्यालय पहुँचे थे। इस तथ्य से तो इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि बाल मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों सभी ने पूर्व बाल्यावस्था देखभाल केंद्रों, पूर्व विद्यालयी कार्यक्रमों, नर्सरी केंद्रों को बाल्यकाल के लिए न केवल अनिवार्य माना है अपितु इसे मानव संसाधन के सर्वोत्तम निवेश के रूप में देखा है।

परंतु सवाल यह उठता है कि क्या मौजूदा परिदृश्य में जहाँ पग-पग पर नर्सरी विद्यालय या पूर्व विद्यालयी शिक्षा केंद्र खुल गए हैं, क्या वे सब गुणवत्तापरक शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन कर पा रहे हैं? क्या इन केंद्रों के संचालक जानते हैं कि गुणवत्तापरक कार्यक्रम बच्चों के विकास अनुरूप गतिविधियों पर आधारित होता है। सवाल तो यह भी उठते हैं कि –

- क्या पूर्व विद्यालयी शिक्षा केंद्रों को विकास अनुरूप गतिविधियों की अवधारणा के प्रति समझ है।
- क्या पूर्व विद्यालयी शिक्षा केंद्र बच्चों के प्रवेश के बाद उनकी विकासात्मक ज़रूरतों का आकलन करते हैं और आकलन से प्राप्त तथ्यों के आधार पर गतिविधियों, खेल एवं शिक्षा कार्यक्रम की योजना बनाते हैं?

अगर नहीं, तो प्री-स्कूल किस आधार पर अपने बच्चों को सिखाते हैं ?

आज सभी अभिभावकों, संरक्षकों, तथा नर्सरी के अध्यापकों को यह ज्ञात होना चाहिए कि विद्यालयी पूर्व शिक्षा 'विकास अनुरूप गतिविधियों' पर क्यों आधारित होनी चाहिए और इसके क्या लाभ हैं। उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि छोटे बच्चों के लिए इसके क्या सरोकार उभर कर आते हैं। सबसे पहले सभी प्री-स्कूलों को बच्चों के परिवार के बारे में पता होना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। दूसरा, सभी प्री-स्कूलों को खेल विधि के माध्यम से सीखने को मुख्य तरीका बनाना चाहिए।

'गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी पूर्व शिक्षा व देखभाल' प्रत्येक बच्चे की निम्नलिखित बातों को महत्त्व देती है –

- बच्चे की आयु
- बच्चे की क्षमता
- बच्चे की रुचि व रुझान
- बच्चे के परिवार की पृष्ठभूमि
- खेल का अधिकार

विकास अनुरूप गतिविधियों पर आधारित विद्यालयी पूर्व शिक्षा के लाभ

हम सभी के लिए यह समझना बहुत आवश्यक है कि बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं खेल कार्यक्रम

वही होते हैं जो 'विकास अनुरूप गतिविधियों' पर आधारित होते हैं।

शोध अध्ययनों से हमें यह पता चलता है कि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम से जुड़ने के अवसर मिलते हैं, उनका बौद्धिक विकास बेहतर होता है, उनके सामाजिक कौशल अधिक विकसित होते हैं और उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण सघन होता है। बच्चों का अपने शिक्षकों के साथ और अन्य वयस्कों के साथ सौहार्द्रपूर्ण रिश्ता होता है। ये बच्चे आगे चलकर प्राथमिक स्कूल में भी जल्दी और बेहतर सीख पाते हैं। खासतौर पर वे बच्चे जो कम आयु में तथा कम पढ़े-लिखे घरों से आते हैं, उन्हें गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी पूर्व शिक्षा से बहुत बड़ी सीमा तक लाभ मिलता है।

गुणवत्तापूर्ण प्री-स्कूल कार्यक्रम में खेल पर आधारित क्रियाकलाप, गीत, संगीत तथा बच्चों के विकास के सभी पहलू यानि उनके सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है और एक संतुलित कार्यक्रम योजना बनायी जाती है।

विकास अनुरूप गतिविधियों का आयोजन एवं क्रियान्वयन कैसे करें ?

कई सालों से शिक्षकों और अभिभावकों ने यह देखा है कि बच्चे खेल द्वारा बेहतर सीखते हैं। खेल तथा बाल-विकास पर किए गए शोध भी हमें यह बताते हैं कि छोटे बच्चे बड़ों की तुलना में अलग प्रकार से सीखते हैं। खेल-खेल में सीखने के दौरान बच्चे चुस्त और सक्रिय रहते हैं।

कागज़ और पेंसिल से संबंधित कार्यों से पहले छोटे बच्चों को प्रत्यक्ष गतिविधियाँ व खेल के अवसर दिए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, चीज़ें कैसे काम करती हैं? बोले गए शब्दों को कैसे लिखा जाता है? अपने नाम की शुरू की ध्वनि पहचानना और उससे नए शब्द बनाना आदि। हमें स्मरण रहना चाहिए कि छोटे बच्चे कार्यपुस्तिका पर लंबी अवधि तक टिक कर काम नहीं कर पाते। बच्चे प्रत्यक्ष रूप से सामग्री, वस्तुओं के साथ काम करके आनंद का अनुभव करते हुए बेहतर सीख पाते हैं और अपनी समझ बनाते हैं।

बच्चों के विकास अनुरूप उचित व उद्दीप्त वातावरण का सृजन करने से बच्चे विकास के सभी क्षेत्रों; जैसे – रचनात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भाषायी, तथा भावात्मक आदि में बहुत सरलता से तथा मिल-जुल कर सीखते हैं। विकास के सभी क्षेत्र एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं व निर्भर रहते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक बच्चे का शारीरिक विकास यानि दोनों पैरों से कूदने का कौशल बहुत अच्छा है और यह क्रिया वह सभी बच्चों के साथ मिलकर करता है तो यह खेल उस बच्चे को दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खेलने तथा अन्य बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए भी प्रेरित करता है अर्थात् शारीरिक विकास के साथ-साथ वह दूसरों के साथ मिलकर खेलना और भाषायी कौशल में भी प्रगति करता है। किसी भी नई सामग्री, वस्तु के साथ खेलते समय बच्चे अपने मानसिक, सामाजिक व शारीरिक कौशल का उपयोग करते हैं। यह एक 'विकासात्मक अनुरूप कार्यक्रम' की पहचान है क्योंकि इसके अंतर्गत शिक्षक एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाते हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक विकास के प्रत्येक क्षेत्रों से संबंधित गतिविधियों का सृजन करते हैं। यह कार्यक्रम एक संतुलित कार्यक्रम होता है जिसमें बाल विकास के सभी क्षेत्रों पर बल दिया जाता है। खेल के माध्यम से सीखने पर बच्चे बेहतर

और जल्दी सीखते हैं और साथ ही खेल बच्चों में तनाव भी कम करता है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्रों तथा प्री-स्कूलों में बच्चों के विकास अनुरूप कार्यक्रम क्यों नहीं होते ?

हाल ही के वर्षों में नर्सरी स्कूलों में बच्चे बहुत बड़ी संख्या में दाखिला ले रहे हैं। सामाजिक परिवर्तनों के कारण आजकल अधिकतर महिलाएँ बाहर काम करने जाती हैं, एकल अभिभावक (Single parents) भी एक कारण है जिसके कारण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा एवं देखभाल केंद्रों की आवश्यकता और माँग बढ़ गई है। यह एक बहुत बड़ा और वाजिब कारण है कि गली-गली में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र खुल गए हैं।

एक प्रकार से तो यह बहुत अच्छी बात है परंतु विचार का विषय तो यह है कि इन केंद्रों के कार्यक्रम निष्पादन गुणवत्ता को आधार बना पाते हैं या नहीं?

क्या इन सभी प्री-स्कूल और पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों द्वारा आयोजित कार्यक्रम बच्चों की आयु और उनके विकास के अनुरूप होते हैं ?

बहुत से अभिभावक अपनी कामकाजी परिस्थितियों के रहते, तो बहुत से अभिभावक पूर्व विद्यालयी शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए अपने बच्चों को नर्सरी विद्यालयों में प्रवेश दिलाने का समझदारी भरा कार्य करते हैं।

दुर्भाग्य से अक्सर इनमें से कई स्कूलों में अधिकतर शिक्षिकाएँ प्रशिक्षित नहीं होती हैं, स्कूलों में आयु व बच्चों के विकास के अनुसार सीखने की सामग्री नहीं होती है, और सबसे बड़ी बात, बच्चों की आयु और विकास अनुसार उपयुक्त पाठ्यक्रम या कार्यक्रम की योजना नहीं होती है। अक्सर यह देखा गया है कि नर्सरी स्कूल बड़े बच्चों के लिए बनाए गए कार्यक्रम और पढ़ाने के तरीकों का उपयोग इन छोटे बच्चों के लिए करते हैं। छोटे बच्चों की कक्षा में बैठने की व्यवस्था भी बड़े बच्चों की तरह होती है, जबकि छोटे बच्चों को छोटे-समूहों में बिठाकर खेल सामग्री देनी चाहिए। वे स्कूल जो थोड़ा बहुत विकास अनुरूप कार्यक्रम देने का प्रत्यत्न कर भी रहे हैं, उन पर पढ़ना, लिखना और गणित कार्य कराने का दबाव रहता है क्योंकि बाकी और अधिकतर प्री-स्कूल यही कर रहे होते हैं। इस तरह के परिवर्तन एवं दबाव के कारण छोटे बच्चों को बड़े बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री से सिखाया जा रहा है जो उनके विकास अनुरूप नहीं है और अनुचित है। अनेक केंद्रों पर तो यह पाया गया है कि नर्सरी स्कूल के बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पहली कक्षा के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर तैयार कर दी जाती है।

यही कारण है कि छोटे बच्चे अपने पाठ्यक्रम और गतिविधियों के प्रति रुचि पैदा नहीं कर पाते हैं क्योंकि यह सब उनके विकास के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।

बहुत से नर्सरी विद्यालयों में तो यह भी देखने में आया है कि वहाँ ऐसे पाठ्यक्रमों को वरीयता दी जाती है जिसमें शिक्षक निर्देशित गतिविधियों की भरमार रहती है। बच्चों को तरह-तरह की कार्य पुस्तिकाएँ दी जाती हैं और उन पर लगातार इस बात का दबाव बना रहता है कि वे इन्हें पूरा करें भले ही वे विषय-वस्तु को समझ पा रहे हैं या नहीं। अपेक्षा तो यह है कि उन्हें रोचक, विकास अनुरुप, सक्रिय गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर दिए जाएँ। अधिकतर शिक्षक और माता-पिता छोटे बच्चों की सीखने की शैली से अनभिज्ञ होते हैं। उन्हें यह लगता है कि

वे प्राथमिक विद्यालय में पहली कक्षा के बच्चे जो सीखते हैं, जैसे 50 तक गिनती लिखना, वर्ण व शब्द लिखना, जोड़ना, घटाना, अंग्रेज़ी में ए, बी, सी, डी लिखना, तीन अक्षर के शब्द बनाना आदि को पढ़ाने से वे बच्चों की मदद कर रहे हैं और यह सारा कुछ भी रटने की प्रवृत्ति द्वारा कराया जाता है।

इन सब अनुचित अपेक्षाओं के कारण छोटे बच्चे भी तनाव संबंधित बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। जो बच्चे शुरू में प्री-स्कूल जाने के लिए बहुत उत्साहित होते हैं, स्कूल में अत्यधिक पाठ्यक्रम के दबाव के कारण वे बच्चे भी नर्सरी स्कूल जाने में कतराने लगते हैं।

अभी हाल ही में लेखिका की जब कुछ अभिभावकों से बातचीत हुई तो पता चला कि कई माता-पिता ने अपने छोटे बच्चों की प्राइवेट ट्यूशन लगा रखी है जहाँ वे अंग्रेज़ी की वर्णमाला सीखने जाते हैं। यह भी पाया गया कि शैक्षिक तकनीकी (ICT) के नाम पर छोटे से कमरे में बच्चों को टेलीविज़न पर वीडियो या कॉर्टून दिखाया जाता है। अगर कुछ प्री-स्कूलों में स्मार्ट बोर्ड (Interactive Board) उपलब्ध भी हैं तो क्या सभी बच्चों को उसके साथ गतिविधि करने के अवसर मिलते हैं। शिक्षिकाएँ अच्छा प्रशिक्षण न मिलने पर या प्रशिक्षित न होने के कारण छोटे बच्चों को उपयुक्त गतिविधियाँ नहीं करा पातीं और अक्सर छोटे बच्चे अधिकांश समय कतारबद्ध होकर गतिविधियाँ करने टीचर के पीछे-पीछे गिनती या वर्णमाला बोलने आदि में बिताते हैं। *जबकि शिक्षिका को चाहिए कि 'प्री-स्कूल कार्यक्रम' के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए 'प्रत्येक दिन की गतिविधियों को बच्चों के आयु और विकास अनुरूप संगीत, कला, पढ़ने की तैयारी, लिखने की तैयारी, बाहरी खेल आदि को समाहित करके कार्यक्रम बनाए।*[9]

यह कैसे पता चले कि कार्यक्रम विकास अनुरूप है या नहीं ?

सभी माता-पिता चाहते हैं उनके बच्चों को कक्षा में एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिले जहाँ शिक्षिका उनके बच्चे को स्नेह से सिखाए। शोध भी इस तथ्य को स्वीकारता है कि 'स्नेहिल शिक्षक-बच्चे का रिश्ता' बच्चों को स्कूल के वातावरण में सहजता से ढाल देता है। एक अच्छी शिक्षिका के लिए स्नेहिल होना, बच्चों को समझना बहुत आवश्यक है। साथ ही छोटे बच्चों को खेल-माध्यम से सिखाने के लिए शिक्षिका का एक अच्छे प्रशिक्षण केंद्र से प्रशिक्षित होना बहुत आवश्यक है। एक प्रशिक्षित शिक्षिका को यह पता होता है कि छोटे बच्चों को उनकी आयु तथा विकास अनुरूप गतिविधियाँ किस प्रकार देनी चाहिए और कार्य करते समय प्रत्येक बच्चे की रुचि को कैसे अवलोकन करके जानना है।

बच्चों की आयु तथा विकास पर आधारित कार्यक्रम बच्चों की रुचि व विशिष्टताओं (strengths) के अनुसार बनाया जाता है जिसमें प्रत्येक बच्चा एक सहज वातावरण में दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खेलता और सीखता है। गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम में विकास अनुरूप गतिविधियाँ बच्चों के सामाजिक तथा बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती हैं। इस कार्यक्रम में शिक्षिका बच्चों की व्यक्तिगत रुचियों के आधार पर अधिगम गतिविधियों का निर्माण करती हैं। विकास-अनुरूप कार्यक्रम के अंतर्गत कराई जाने वाली गतिविधियों में बच्चों की आयु और रुचियों का संतुलन होना बहुत आवश्यक है।

एक प्रशिक्षित शिक्षिका जानती है कि बच्चों के आत्मविश्वास को विकसित करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण समझ और रिश्ता बनाने के लिए आत्मविश्वास बहुत आवश्यक है। शुरुआती वर्षों में बच्चों का आत्मविश्वास उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है।

एक विकास-अनुरूप कार्यक्रम में शिक्षिका अपने बच्चों की बात ध्यानपूर्वक तथा धैर्य से सुनती है तथा बच्चों की दृष्टि स्तर पर उनसे बात करती है। आप देखेंगे कि इस तरह के कार्यक्रम में शिक्षिका बच्चों को स्नेह से, मुस्कुरा के, प्रोत्साहन द्वारा एक सहज वातावरण देने का प्रयत्न करती है।

इस तरह के सहज और उद्दीपित वातावरण में बच्चे खुश दिखाई देते हैं। एक स्नेहिल व सहज वातावरण में बच्चे सरलता से अन्य लोगों का आदर-सम्मान करना सीख जाते हैं। शिक्षिका और स्कूल के अन्य सदस्य बच्चों के साथ स्नेह भरा व्यवहार करते हैं, वे बच्चों को कभी ज़ोर से डाँटते नहीं, उन पर चिल्लाते नहीं, उन्हें भिन्न नामों से नहीं बुलाते। यहाँ किसी प्रकार की सज़ा नहीं दी जाती, धमकाया या डराया नहीं जाता।

एक अच्छे प्री-स्कूल में शिक्षिका विभिन्न खेल-क्षेत्रों की स्थापना करती है जहाँ छोटे-समूहों में बच्चे खेलते हुए सीखते हैं। यह खेल क्षेत्र मुख्य रूप से –'कला क्षेत्र', गुड़िया-घर, संगीत क्षेत्र, 'पढ़ने की तैयारी संबंधित क्षेत्र', 'लिखने की तैयारी का क्षेत्र', ब्लॉक्स क्षेत्र आदि होते हैं।

यह खेल क्षेत्र तरह-तरह के खेल दर्शाते हैं– जैसे — कुछ खेल शांत तथा कुछ खेल सक्रिय हो सकते हैं। इन क्षेत्रों में उपलब्ध खेलने की सामग्री पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यहाँ अलग-अलग 'डेस्क सिस्टम' नहीं होता जहाँ बच्चे को सिर्फ़ शिक्षिका को सुनकर कार्य करना होता है। विकास अनुरूप कार्यक्रम में कक्षा के सभी बच्चों को एक ही गतिविधि करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता अपितु बच्चों को व्यक्तिगत या स्वतंत्र रूप से अपनी स्वेच्छा से खेलने की स्वतंत्रता होती है अथवा वे अपने किसी साथी के साथ या छोटे समूह में खेलते हैं। इस तरह के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में बच्चे भली-भाँति स्वयं ही कक्षा के अन्य साथियों के साथ हिल-मिल जाते हैं। इस तरह के माहौल में बच्चे सामग्री को पाने के लिए होड़ नहीं करते और उनका व्यवहार भी दूसरों का ध्यान अपनी तरफ खींचने वाला नहीं होता। छोटे समूह में काम करते हुए बच्चे दूसरों की बातों को धैयपूर्वक सुनना सीखते हैं, अपनी बात को व्यक्त कर पाते हैं, तथा धीरे-धीरे दूसरों की बातों का दृष्टिकोण भी समझने लगते हैं।

अभिभावकों तथा शिक्षिकाओं के बीच आत्मीयता का व्यवहार एक गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के लिए अत्यंत आवश्यक है। पूर्व-प्राथमिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में बच्चों के परिवार की पृष्ठभूमि की जानकारी होना प्रमुख आवश्यकता है। विकास अनुरूपी गतिविधियों के अंतर्गत बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को जानना अत्यंत आवश्यक है।

इसमें शिक्षिकाएँ प्रत्येक बच्चे की रुचि तथा उसके परिवार के बारे में निरंतर जानने का प्रयास करती हैं। अभिभावक अपने बच्चों के बारे में शिक्षिकाओं के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखते हैं और उन्हें संपूर्ण सहयोग देते हैं। एक शिक्षिका जो बाल विकास में प्रशिक्षित है और कई वर्षों से अनेक बच्चों को खेल-गतिविधियाँ करा रही है, उसे निश्चित रूप से अपने

कक्षा के बच्चों की आयु, विकास तथा क्षमता के अनुसार यह पता है कि उसके बच्चों के लिए कौन-सी विकास-अनुरूपी गतिविधियाँ होनी चाहिए। यहाँ शिक्षिका जानती है कि उसके बच्चे खेल के माध्यम से अधिक और बेहतर कैसे सीख सकते हैं। जब शिक्षिका और अभिभावक मिलकर कार्य करते है तो वे जान पाते हैं कि कौन-कौन सी गतिविधियाँ बच्चों को रोचक लगती हैं और कौन-कौन सी बातें एवं कार्य उन्हें थकाते हैं, चिड़चिड़ा बनाते हैं और उकताहट पैदा करते हैं।

एक अच्छा प्रशिक्षण और निरंतर आत्म-विश्लेषण (self-analysis) ही शिक्षिका को छोटे बच्चों के साथ कार्य करने में निपुण बनाता है। पूर्व-प्राथमिक बाल शिक्षा में प्रशिक्षण एवं बाल विकास की समझ से शिक्षिका निश्चित तौर से बेहतर गुणवत्तापरक कार्यक्रम दे पाने में सक्षम होती है। एक अच्छे प्री-स्कूल में जहाँ कार्यक्रम बच्चों के विकास अनुरूप होता है वहाँ सभी शिक्षिकाएँ बाल-विकास या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में प्रशिक्षित होती हैं जिस कारण वे छोटे बच्चों के विकास को भली-भाँति समझती हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में अध्यापक और बच्चों की संख्या का सही अनुपात होना ज़रूरी है। इससे शिक्षिका प्रत्येक बच्चे से एक सौहार्द्र एवं सहयोग पूर्ण संबंध बना एवं कायम कर पाती है और उसे बेहतर तौर पर जान पाती है। गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि बच्चों की संख्या उतनी हो जिससे एक शिक्षिका प्रत्येक बच्चे पर पर्याप्त ध्यान दे सके।

क्या आप कभी प्री-स्कूल में गए हैं? देखें कि कक्षा में कितने बच्चे हैं। क्या शिक्षिका सभी बच्चों पर ध्यान दे पा रही है? छोटे समूहों में खेल गतिविधियाँ और उचित अध्यापक-शिक्षार्थी अनुपात बच्चों और शिक्षिका के बीच गुणवत्तापरक बातचीत और विकास अनुरूपी कार्यक्रम का प्रमुख संकेतक है।

अध्यापकों का बदलना (स्थायित्व की कमी)

शिक्षिकाओं का कम से कम बदलना गुणवत्ता का एक और संकेतक है। छोटे बच्चों के साथ कम से कम एक वर्ष तक एक ही शिक्षिका का उनके साथ होना बहुत आवश्यक है। हम अक्सर देखते हैं कि स्कूलों में बहुत जल्दी-जल्दी शिक्षक बदल जाते हैं या वे स्कूल छोड़ जाते हैं। गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी पूर्व शिक्षा अथवा एक अच्छे प्री-स्कूल के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि वहाँ के अध्यापकों में स्थायित्व है या नहीं।

सीखने की सामग्री

हर प्रकार की खेल सामग्री को बच्चों के स्तरानुसार बनी शैल्फ़ों पर रखना चाहिए, जिससे बच्चे आसानी से उठा सकें और वापस यथास्थान रख सकें। सभी शैल्फ़ों पर सामग्री के नाम और चित्र लगें जिससे बच्चे मिलान कर खेल सामग्री को वापस रख सकें। यह एक प्रकार से पढ़ने की तैयारी का भी एक तरीका है। बच्चों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार खेल सामग्री का चयन करने की स्वतंत्रता होती है क्योंकि सभी के लिए पर्याप्त और विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री होती है। इस प्रकार विकास अनुरूपी कार्यक्रम में शिक्षिका सभी बच्चों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार खेल सामग्री दे पाती है। इस तरह के वातावरण में जहाँ सभी को पर्याप्त अवसर मिलें, अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार खेल-खिलौने,

गतिविधियाँ मिलें तो असफलता की संभावनाएँ न के बराबर हो जाती हैं और सफलताओं के दरवाज़े स्वत: खुलने लगते हैं।

बच्चों को खेल-सामग्री का इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता होती है। उदाहरण के लिए, शिक्षिका ने सभी बच्चों को गीली मिट्टी से हाथी बनाने को कहा – एक बच्चे ने अपने सृजनात्मक चितंन से कुछ नवीन बनाया। विकास अनुरूपी कार्यक्रम में शिक्षिका बाध्य नहीं करती – उसने गीली मिट्टी देकर कहा –'चलो सब अपने मन का कुछ बनाओ'।

यहाँ विचार थोपे नहीं जाते। सभी बच्चों को एक जैसा बनाने को बाध्य नहीं किया जाता। सामग्री चाहे वह खेल सामग्री हो या कला-सामग्री उसको इस्तेमाल करने की प्रक्रिया अधिक महत्वपूर्ण है न कि आखिर में क्या बना है।

रंग भरने की कार्यपुस्तिका या पहले से बनाए गए कार्य-पत्रक सृजनात्मक गतिविधियों का रूप नहीं ले सकते। इस प्रकार की गतिविधियाँ छोटे बच्चों के लिए अनुपयुक्त हैं।

यदि आपके अवलोकन आपको यह बताते हैं कि एक ही समूह के बच्चों के कार्यों में विविधता है, यानि सभी बच्चे अपनी रुचि के नमूने, रंगों, आकार-प्रकार का प्रयोग कर रहे हैं और वैविध्यपूर्ण माहौल की रचना कर रहे हैं तो समझिए कि यह विकासात्मक अनुरूप कार्यक्रम है।

प्रत्येक दिन की समय-सारणी

एक दिन का कार्यक्रम एक संतुलित कार्यक्रम होता है जिसमें आंतरिक व बाहरी खेल, शांत व सक्रिय खेल तथा छोटे समूह व बड़े समूह में खेल-गतिविधियाँ करायी जाती हैं।

इसमें एक गतिविधि शिक्षिका-निर्देशित भी होती है, जो बच्चों की आयु के अनुसार नियोजित की जाती है जो तकरीबन 15-20 मिनट की होती है। (समय बच्चों की आयु पर निर्भर करता है) एक दिन की समय सारणी में बाल-विकास के सभी पहलुओं से संबंधित गतिविधियाँ होती हैं जो एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं। यह एक लचीली (flexible) समय सारणी होती है जिसमें बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार फ़ेर-बदल की जा सकती है।

विकास अनुरूपी कार्यक्रम में बच्चे निरंतर सीखते हैं। गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में अच्छी व स्वास्थ्य संबंधी आदतों का विकास होता है, साथ ही अन्य बच्चों के साथ मिल-जुलकर खेलना, अपनी वस्तुओं को सँभालकर रखना, निर्णय करना, समस्या सुलझाना, अपनी बात दूसरों को समझाना, आदि एक गुणवत्ता कार्यक्रम का संकेतक है।

एक अच्छी शिक्षिका बच्चों का अवलोकन कर उनकी रुचि और क्षमताओं को जानने का प्रयास करती है और उसके पश्चात् ही गतिविधियों की योजना बनाती है। बच्चे एक ही चीज़ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से सीखते हैं, इसी प्रकार वे विभिन्न प्रकार की चीज़ें तथा बातें एक गतिविधि में भाग लेने से सीख जाते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे तरह-तरह के रंगों के विषय में कला की गतिविधि से सीखते हैं, कहानी/गीत के माध्यम से सीखते हैं। बच्चों को एक जगह बिठाकर उन्हें बार-बार बताना –'यह लाल रंग है' बहुत ही बेकार और निरर्थक है अपितु होना तो यह चाहिए कि उनको दिनभर में ऐसे अवसर दें जहाँ वे सक्रिय रूप से रंगों के साथ कार्य करें।

प्रशिक्षित शिक्षिका को यह ज्ञात होता है कि बच्चों का विकास एक निरंतर प्रक्रिया है और

इसी कारण वे बड़ी सरलता से बच्चों की आयु व स्तर अनुसार गतिविधियों का मिलान कर पाती है। उदाहरण के तौर पर, तीन वर्ष से छोटे बच्चों को किसी भी वस्तु/सामग्री को बाँटने में दिक्कत होती है या वह बाँटना नहीं चाहती। प्रशिक्षित शिक्षिका इस बात को भली-भाँति समझती है और इसीलिए वह एक तरह की वस्तु के कई प्रतिमान रखती है। धीरे-धीरे छोटे समूह में खेल करते हुए शिक्षिका मिल-जुल कर खेलने और बाँटने के लिए प्रेरित करती है। जब बच्चे एक-दूसरे की मदद करते हैं, बाँटते हैं तो शिक्षिका इस बात की प्रशंसा करती है और ऐसे व्यवहार को प्रोत्साहित करती है। जहाँ बच्चे अभी छोटे हैं शिक्षिका बाँटने के लिए बाध्य करती है, दंड देती है तो ऐसे कार्यक्रम में बच्चों में चिड़चिड़ापन आ जाता है, खीझ पैदा होती है और बच्चों के मन में स्कूल आने का उत्साह नहीं रहता। इस तरह के कार्यक्रमों को निरुत्साहित करना होगा।

परिवार के साथ निरंतर संपर्क और बातचीत एक गुणवत्तापरक प्री-स्कूल के संकेतक हैं जिसमें माता-पिता की सहभागिता होती है। गुणवत्ता कार्यक्रम वाले प्री-स्कूल अभिभावकों को अपने स्कूल से जोड़े रखने के लिए कई प्रकार की गतिविधियाँ रखते हैं, उनका स्वागत करते हैं, उनके सुझावों को सुनते हैं।

अच्छी प्रशिक्षित शिक्षिकाएँ अच्छी कार्यक्रम योजना बनाती हैं। अंत में हमें यह याद रखना है कि विकास अनुरूपी कार्यक्रम एक गुणवत्तापरक कार्यक्रम है जिसमें सभी यानि परिवार, शिक्षिकाएँ तथा स्कूल के अन्य सदस्य प्रत्येक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए मिल-जुलकर कार्य करते हैं। साथ ही सभी शिक्षकों को यह भी स्मरण रखना है कि विकास अनुरूपी कार्यक्रम का तात्पर्य प्री-स्कूल में गतिविधियों और क्रियाओं का बेहतर रूप से आयोजन करना है।

तो क्या अब आप किसी प्री-स्कूल की कक्षा का अवलोकन कर जान पाएँगे कि वहाँ विकास अनुरूपी गतिविधियाँ या कार्यक्रम हो रहे हैं या नहीं ?

संदर्भ

ई.एफ.ए. 2015. *वैश्विक निगरानी रिपोर्ट — सभी के लिए शिक्षा (2000-2015) — उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ.* यूनेस्को प्रकाशन.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005.* नयी दिल्ली.

सोनी, रोमिला, राजेंद्र कपूर और कृष्ण कांत वशिष्ठ. 2003. *पूर्व-प्राथमिक शिक्षा – एक परिचय.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

____ और संध्या संघई. 2016. *प्रत्येक बच्चा महत्वपूर्ण – हैंडबुक.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली. (प्रकाशनाधीन)

____. 2015. *थीम-बेस्ड अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन प्रोगाम – ए रिसोर्स बुक.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.